Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN (Online): 3048-6513
Volume: 3 Issue: 2 || February 2026 || DOI: 10.5281/zenodo.18797749

धर्म का राजनीतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. संजू[1]

सारांश :

भारतीय संविधान में धर्म की व्याख्या में अनुच्छेद 25 से 28 तक प्रावधान मिलता है जिसके तहत भारतीय व्यक्तियों को धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार से संबंधित सूचना प्राप्त होती है। जिसमें भारत देश को धर्मनिरपेक्ष या पंतनिरपेक्ष घोषित किया गया है। जिसका सीधा अर्थ यह है, कि भारत का कोई मूल धर्म नहीं है, साथ ही सभी नागरिक को धर्म का पालन करना है यह वह धर्म है जिसे हमारा संविधान बताता है सभी धर्मो के साथ समान व्यवहार हो या किया जाना है जिसे यह सार्वजनिक व्यवस्था और नैतिकता के अधीन रखा गया है।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार :– धर्म को व्यक्तिगत आस्था का विषय माना साथ ही यह कहा कि धर्म को सामाजिक न्याय ही समानता के खिलाफ नहीं होना चाहिए।

धर्म का अर्थ :– धर्म एक व्यापक अवधारणा है जो जीवन यापन के सही मार्ग एवं नैतिक मूल्यों, कत्तत्यो की व्याख्या करता है धर्म की प्रारंभिक आवस्था में मनुष्य का जीवन शुरू हुआ तथा जब मानव की उत्पति हुई तभी से धर्म का विकास हुआ जैसे–जैसे मानव जगत की बढ़ोतरी होती गई धर्म का बढ़ना प्रारंभ हुआ मनुष्य अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए धर्म का विकास करता चला गया साथ ही मानव–मानव में भेद बढ़ने लगा सभी व्यक्ति अपने हित को सोचने लगे एवं धर्म का प्रतीक समयानुसार बदलने लगा।

की वर्ड :– धर्म, व्यक्ति, हित, समाज, उत्पति, विकास।

प्रस्तावना :– प्रत्येक देश या समाज में धर्म की शुरूआत किसी न किसी स्थान से मान जाता है ठीक वैसे ही भारत में धर्म की शुरूआत कुछ विद्वानों द्वारा 10,000 साल पहले पुरापाषाण काल से माना जाता है साथ ही कुछ अन्य विद्वान यह भी मानते है। कि धर्म की प्रारंभिक अवस्था सिंधु घाटी सभ्यता को और ईशा पूर्व के बीच की मानते है जिससे मानव समाज की उत्पत्ति के साथ ही धर्म की शुरूआत हुई जैसे–जैसे मानव जनसंख्या बढ़ते गये लोगो की चाहत बढ़ने लगी परिवार एवं समाज बढ़ता गया और लाभ के लिए लोग बढ़लते चले गये शुरूआत में धर्म काम के आधार पर था किन्तु धीरे धीरे यह जाति का रूप धारण कर लिया जहाँ धर्म को नैतिक माना जाता था। वही धर्म जाति में बदलने के बाद अलग–अलग समुदायों के तीव्र गति से बढ़ना प्रारंभ हो गया धर्म के नाम पर नैतिक कार्य करने वाले

[1] ई.मेल- sanju281017@gmail.com

लोग जाति के नाम पर नैतिक मार्गदर्शन ना देकर जीवन जीने के तरिके से जोड़कर उसे कार्य में विभाजित कर दिया साथ ही यह आगे चलकर जाति का रूप लेकर लोग अलग–अलग धर्म समुदाय में बट गये और लोगों की धारणा बन गयी कि जो जिस धर्म का है। वही कार्य उसे सौपा जाए भारतीय मनुस्मृति में धर्म की नीति जिसे धर्म कहाँ गया में व्यक्ति और समाज के लिए निर्धारित नैतिक कानूनी कर्तव्य शामिल है। यह वैदिक काल में योग्यता आधारित था बाद में जन्म आधारित हो गया धर्म को अलग अलग काल में देखा गया और नैतिकता से जोड़ा गया वर्तमान परिदृश्य में देखा जाय तो धर्म यानि व्यक्ति का धर्म/जाति – जो व्यक्ति जिस जाति का है वही जाति धर्म आज प्रत्येक क्षेत्र में बाधा उत्पन्न कर रही है जातियों में भाषा शैली रहन, सहन, संस्कृति आदि की प्रजाति के कारण जो समस्या वर्तमान में है। जिसके कारण प्रत्येक दिन दंगे फसाद झगड़े देखने को मिलता है एवं धर्म के नाम पर जो अंधविश्वास समाज को खोखली कर रही है लूट रही है उसे देखते हुई धर्म की स्थिति को सुधारने की आवश्याकता है समाज में फैले धर्म के नाम का वर्ण आधारित व्यवस्था को ही समाप्त कर देना चाहिए संविधान में कुछ संशोधन करके प्रावधान तैयार की जाए जिससे धर्म को अलग–अलग भाग में बांट कर आज लूट एवं धोखाधड़ी हो रही है उन भागो को समाप्त कर देना चाहिए। गांधी जी द्वारा कही गयी हिन्दु शब्द को हटाकर के भारतीय कर देना चाहिए ताकि हिन्दु मुस्लिम, सिक्ख, जैन, धर्म का बटवारे से समाज में हो रहे धर्म की हानि से बचा जा सके अलग–अलग क्षेत्र में हो रहे धर्म एवं जाति की राजनीति से भी मुक्ति मिल सके राजनीति पार्टी जो धर्म एवं जाति के नाम पर वोट बैंक बनाते है उससे बचा जा सके एवं खून की राजनीति बंद हो सके एवं सभी व्यक्ति राजनीति में बढ़ चढ़ कर भाग ले सके और अपने साथ हो रहे अन्याय को समझकर सुधार सके और समाज एवं देश की समस्या का समाधान हो सके।

उद्देश्य :–

1. धर्म की समस्या का समाधान करना।
2. अंधविश्वास से डुबे प्रत्येक व्यक्ति की समझ का विकास करना।
3. शोषित हो रही महिलाओं के विचार में बदलाव लाना।
4. धर्म की राजनीति वोट बैंक से समाज को अवगत करना।
5. धर्म से फैल रही समाजिक समस्या का निदान करना।

शोध प्रविधि – किसी शोध पद्धति को पूरा करने तथा उसके सार तक पहुंचने के लिए शोध पद्धति का प्रयोग किया जाना अति आवश्यक होता है क्योंकि साक्ष्य एकत्रित करने के लिए अनेक विधि होती है जो अध्ययन विषय के अनुसार तय की जाती है इस शोध प्रक्रिया में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत के माध्यम से सूचनाए एकत्रित किया जाता है प्रतावित शोध विधि में दोनो स्रोतो का उपयोग किया जायेगा।

प्राथमिक स्रोत – प्राथमिक स्रोत किसी घटना, वस्तु, व्यक्ति या कला के काम के बारे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष साक्ष्य प्रदान करता है। प्राथमिक स्रोतों में ऐतिहासिक और कानूनी दस्तावेज़, प्रत्यक्षदर्शी विवरण, प्रयोगों के परिणाम, सांख्यिकीय डेटा, रचनात्मक लेखन के टुकड़े, ऑडियो और कला वस्तुएं शामिल हैं।

द्वितीयक स्रोत –

विभिन्न शासकीय रिपोर्ट जनगणना रिपोर्ट शासकीय विभाग से प्राप्त किया गया। द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत निम्न आंकड़ों का अध्ययन किया गया

1. शासकीय प्रतिवेदन
2. जनगणना रिपोर्ट
3. शासकीय प्रकाशन
4. समाचार पत्र पत्रिकाएँ

धर्म का प्रभाव :– समाज या देश में धर्म का प्रभाव अत्यधिक माना गया है।

कार्ल मार्क्स का कथन :– मनुष्य धर्म को बनाता, है धर्म मनुष्य को नहीं।

गौतम बुद्ध के अनुसार :– धर्म का अर्थ सही आचरण जो प्राणियों के प्रति दया, करूणा और अहिंसा पर आधारित हो।

गांधी के अनुसार :– धर्म को सत्य का मार्ग माना समाज में जाति धर्म समुदाय एक दूसरे से संबंधित है क्योकि धर्म ही जाति को बनाता है। और इससे ही समुदाय का बटवारा होता है। धर्म के बटवारे के तत्पश्चात प्रत्येक व्यक्ति मानसिक रूप से बदलते चले जाता है उच्च वर्ग का वर्चस्व प्रांरभिक काल में अधिक होने के कारण उन्हें समाज में अच्छा दर्जा मिलने के कारण वे अपने लाभ हेतु अपने से नीचले स्तर के लोगों को सिखाता गया लोग उसे मानते गये और आज उन्ही के हाथों शोषित हो रहे भारत देश जहाँ 100 वर्ष अंग्रेजो ने शासन किया वहाँ आज उच्च वर्ग के लोग धर्म की आड़ में रहकर गरीब एवं महिलाओं, बच्चों को धर्म के नाम पर लुट रहे अंधविश्वास फैला रहे जिससे उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधर गई उन्हें लाभ भी मिल रहा किन्तु अंधी समाज को यह बात आज तक समझ नहीं आयी कि अपना शोषण करने वाले वही है जो उन्हें अंधविश्वास की ओर ले गयें जिन पंडितों पुरोहितों के बातों में आकर एक पढ़ा लिखा व्यक्ति भी उनकी अंधविश्वासी बातों जैसे भविष्याणी, कर्म काण्ड आदि हवन, पूँजा, यज्ञ आदि से गरीबों को और गरीब बना रहे है समाज में प्रत्येक व्यक्ति जो गलत नहीं भी करना चाहता उन्हें धर्म, पाप, पुण्य से जोड़कर लोगों को गलत काम करने पर मजबूर कर रहे साथ ही महिलाओं को धर्म की आड़ लेकर उनके विचार में आस्था जोड़कर उन्हें प्रत्येक आध्यात्मिक बातों में उलझाकर उन्हें गलत कर्मो में फसा रहें यह कही ना कही समाज को बुराई की ओर ढ़केल रहा है। और समाज के प्रत्येक व्यक्ति धर्म की आड़ में अपराध को करने के लिए विवश हो रहे है जैसे धर्म परिवर्तन आदि इस स्थिति से निदान पाने हेतु सरकार द्वारा विभिन्न तरह के प्रवधान करने के प्रयास में है साथ ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म का प्रभाव देखने को मिलता है चाहे वह सामजिक हो आर्थिक हो राजनीति या आध्यात्मिक साथ ही समाज

में धर्म विश्वास के नाम पर जातियों के अलग–अलग रूप के विचार में प्रभाव देखने को मिलता है साथ ही वह प्रत्येक स्थान जहाँ धर्म का प्रभाव है।

1. **समाजिक क्षेत्र में धर्म का प्रभाव :–** धर्म लोगों के जीवन का हर प्रकार से प्रभावित करता है समाज का व्यक्ति किसी भी कार्य को करना चाहता है जिससे उसको हित हो तो अन्य समाजिक धर्म का व्यक्ति उन्हें पाप एवं पुण्य का वास्ता देकर उन्हें भयभीत कर उनके मार्ग में धर्म एक बाधा बनने का कार्य करता है धर्म को मानना एक प्रकार का भय है।

थामस हाब्स कहते है व्यक्ति हर कार्य भय से करता है, यदि वह कर्म धर्म का है।

प्रभाव आर्थिक क्षेत्र में धर्म का :– प्रभाव समाज प्रत्येक व्यक्ति धर्म के नाम पर पूजा पाठ यज्ञ करता है और हवन, पूँजा, पाठ से उन्हें शांति प्राप्त होती है इस तरह के विचार उनके मस्तिष्क पर प्रारंभिक एवं आध्यत्मिक काल से जगाया गया जिसके कारण व्यक्ति ना चाहते हुए भी ब्राम्हण एवं पंड़ितों के डरावनी बातो में आकर अपना धन बल आदि लुटाते है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही है। लोगो का विचार है खाने को घर में होना हो बच्चों को पढ़ाने हेतु धन हो या न हो किन्तु प्रत्येक धार्मिक त्यौहारों में भगवान की पूँजा पाठ हेतु जो भी सामग्री पंड़ितों द्वारा बताई जाती है उन्हें वह व्यक्ति पूरा करने हेतु अपना पूरा सामर्थ जूटाता है इन्हीं विचारो के कारण धर्म का क्षेत्र आज लुट प्रणाली की ओर जा रहा है।

राजनीति क्षेत्र पर धर्म का प्रभाव :– समाज में अलग–अलग धर्म को मानने वाले लोग निवासरत है उन्हें उनके समाज के अभिजन वर्ग के व्यक्तियों द्वारा उनका राजनीति में वोट बैंक हेतु एक धर्म का व्यक्ति दूसरे धर्म के व्यक्ति के विरोधी बनाने का कार्य राजनीति में होता रहा साथ ही एक धर्म यदि किसी राजनीतिक दल को समर्थन देता है तो दूसरे राजनीतिक दल के समर्थन उनके विरोध में वे धर्म अलग–अलग धर्म का नाम कर देते है और वह राजनीतिक हो जाता है जिससे समाज में धार्मिक कुटनीति प्रारंभ हो जाती है एवं राजनीतिक दल आपस में धर्म के नाम पर एक दूसरे से लाभ अर्जित कर लेता है इसमें हानि आम व्यक्तियों का होता है साथ सही व्यक्ति का चयन भी नहीं हो पाता एवं धन बल वाला व्यक्ति अभिजन राजनीतिक गददी पाकर उनका शोषण करते हैं।

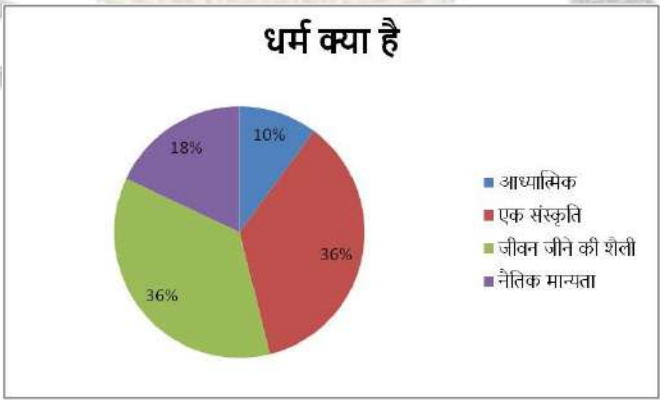

स्रोत – गूगल फॉर्म

Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN (Online): 3048-6513
Volume: 3 Issue: 2 || February 2026 || DOI: 10.5281/zenodo.18797749

आध्यात्मिक क्षेत्र में धर्म का प्रभाव :– आध्यात्मिक क्षेत्र में धर्म का सबसे अधिक प्रभाव है इसमें प्रत्येक व्यक्ति का मानना है कि यह धर्म मनुष्य के जीवन में नैतिक मूल्यों को मानने एवं उच्च शक्ति (जिन्हें ईश्वर या भगवान) कहाँ जाता है उससे जुड़ने में मद्द मिलती है साथ ही वे मानते है कि इससे आंतरिक शांति एवं संतुष्टि प्राप्त करने के सहायता मिलती है इसमें सबसे अधिक शोषित महिलाएँ हैं। महिलाओं को यदि धर्म के नाम से अपने पूरे परिवार को छोड़ देने कहाँ जाय तो वे पिछे नहीं रहती वे सोचती कि उनके छोड़ने से अनका परिवार सुख एवं शांति प्राप्त करेगा जो पूर्णत अंधविश्वास है जिससे उन्हें एवं उनके परिवार को केवल और केवल परेशानी और दुख का सामना करना पड़ता है समाज में धर्म के नाम पर आस्था के नाम पर लोगों को लुटा जा रहा है भगवान ईश्वर सब कुछ यह पांखड समाज में फैलाया गया है और यह कार्य अधिकतर पंड़ितों पुजारियों द्वारा ज्यादा किया जाता है जिससे अधिक आध्यामित्क अपराध बढ़ता जा रहा है धर्म का प्रभाव सही नहीं पड़ रहा हैं।

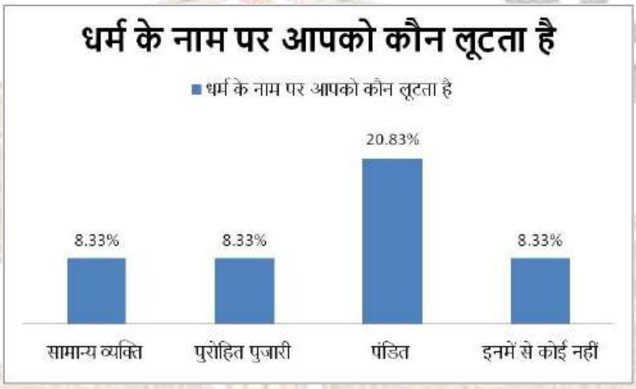

स्रोत – गूगल फॉर्म

पर्यावरणीय प्रभाव :– धर्म के नाम से जो समाज में अलग–अलग जाति धर्म सम्प्रदाय निवासरत है सभी का अपना एक ईश्वर भगवान है और वे उन्हें बढ़ाने एवं उनका प्रचार प्रसार करने हेतु विभिन्न तरह के मंदिरों मस्जिदों का निर्माणकर रहे है। साथ ही पूँजा पाठ हवन में जिन सामग्रियों का उपयोग होता है उन्हें उपयोग में लाते है तत्पश्चात उनसे उपशिष्ट पदार्थ बनते है उन्हें नदी नालों समुद्रों में फेक दिया जाता है जिससे जल प्रदुषण एवं मृदा प्रदुषण साथ ही वायुप्रदुषण भी फैल रहा है जिससे मावन, पशु पक्षी सभी प्राणियों के जीवन में हानिकार प्रभाव बड़ता जा रहा हैं।

निष्कर्ष :– समाज में धर्म का वर्चस्व इतना अधिक है कि यदि कोई व्यकित यदि धर्म पर बात करे तो वहाँ केवल और केवल तिरसकार मिलता है लोगों को समझना एवं समझाना होगा कि इस संसार में जो भी व्यक्ति को प्राप्त होता चाहे वह सुख, हो या दुख हो वे उनके कर्म का फल होता है उन्हें समझना हागा कि यदि किसी व्यक्ति पर बाधा आती है तो कोई ईश्वर या भगवान जिन्हें धर्म बताता या सिखाता है वे आकर आपकी रक्षा नहीं करता कोई व्यक्ति ही वहाँ उपस्थित होकर आपकी रक्षा करता है उस रक्षा या मद्द को धार्मिक व्यक्ति धर्म ईश्वर से जोड़कर आपको अंधविश्वास की ओर ले जाता है लोगों को यह समझने की जरूरत है कि जिस शादी विवाह को समाज

ईश्वर की बनाई जोड़ी मानकर पंड़ितों से विवाह का शुभ मुहुरूत निकलवाता है उस व्यक्ति का विवाह टूटने के समय कोई शुभ मुहुरूत नहीं होता व्यक्ति का मृत्यु का कोई मुहुरूत नहीं होता साथ ही यह सभी जितनी योग और संयोग यह प्राकृतिक आध्यामित्क नहीं है लोगों के मस्तिष्क में यह विचार किसी शैक्षणिक संस्थान या सभा के माध्यम से इस विषय पर बात की जाए एवं धर्म के नाम पर लुट रहे लोगो को सुधारने की कड़ी चेतावनी दी जाए एवं सरकार के नीति के माध्यम से प्रत्येक आध्यामित्क क्षेत्र पर बने मंदिरों मंस्जिदों में जितनी मात्रा में लोग दर्शन हेतु दान करते है उन्हें सरकार कर अदा हेतु नियम लागु करे जिससे धर्म का धंधा करने वाले लोगो पर अंकुश लगाया जा सके, पाप, पाखंड़ करने वाले प्रत्येक व्यक्ति धर्म के नाम से जुड़े है एसे संस्थान के अनुज्ञापत्र को रद्द करने चाहिए एवं प्रत्येक धार्मिक संस्थान में जाति प्रथा समाप्त करने चाहिएँ। साथ ही मंदिरों में बैठने वाले पुजारी की नियुक्ति मंदिर सेवा हेतु प्रत्येक समाज के व्यक्ति को मौका दी जाय उसका चयन हो इस तरह समाज से अंधविश्वासी कुरिती को हराया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. धर्म और विज्ञान '' डॉ. सुग्रीव बलीराम काले, (2019)
2. शूद्र कौन थे '' आचार्य सूर्यकांत भगत, (2023)
3. जीवन की खोज '' ओशो, (2020)
4. मैं नास्तिक क्यो हु'' भगत सिंह, (2024)
5. शक्ति '' रॉन्डा बर्न, (2015)
6. जैसा मनुष्य सोचता है '' जेम्स एलन, (2024)
7. जीवन जीने की कला '' स्वामी आत्मानंद सत्यार्थी, (1997)
8. जाति व्यवस्था और पितृसता '' प्रेरियार ई रामास्वामी '' प्रमोद रजन, (2020)
9. गुलाम गिरी '' प्रभाकर गजभिये, (2020)

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*